തിയ്യതി................... 64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം ★ പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി ★

मैं कौन हूँ ?
दर्द भरी अतीत की यादें !..

तेज बारिश हो रही थी। बारिश की बूँदे पेड़ों की पत्तियों मे गिरने पर रिमझिम की आवाजे सुनाई दे रही थी। बारिश के वजह से ठीक से रास्ते भी नजर नहीं आ रहे थे। सुबह का वक्त था। दिल्ली मे सुबह ही मौसम खराब था। लेकिन तब भी जगह-जगह मे कहीं-कहीं बच्चों की हँसी-खुशी की आवाजे कानों मे गूँज रही थी।

"राम शर्मा" जो एक चालीस साल का नौजवान था! अपने बिस्तर से उठा और जल्दी काम के लिए तैयार होने लगा। उसके बाल काफ़ी कम थे... वह लगभग गँजा था। उसकी आँखो मे एक अजीब-सी चमक नजर आ रही थी!.. और ~~उसकी~~ आँखो के नीचे काले धब्बे बन चुके थे। शायद ज्यादा काम पर ध्यान देने की वजह से हो। उसका पूरा चेहरा काफ़ी थका हुआ नजर आ रहा था।

समय साढ़े नौ बजने वाले थे। राम बिना समय बर्बाद किए अपनी गाड़ी लेकर दफ़्तर की ओर जाने लगा। उसका मन शांत था किसी चीज़ को सोच कर!.. लेकिन क्या? राम जल्दी दफ़्तर पहुँच गया। बिल्कुल उसी क्षण जब वह दफ़्तर पर पहुँचा बारिश भी रुक गई। एक अजीब इत्तफ़ाक की तरह।

उसका मन काफ़ी हिचकिचा रहा था ऑफ़ीस के अंदर जाने के लिए। तभी उसका जिगरी दोस्त "मोहन" आता है, बिल्कील उसीके उम्र का!.. लेकिन काफ़ी तंदरुस्त। काफ़ी लंबा आदमी... जिसने काफ़ी मेहंगा सूट वगैरह पहनकर आया था। "चलो राम!.. 'आफ़ीस' के अंदर नहीं जाना क्या!?", मोहन राम के कंधों पर हाथ रख कर बोला।

"तुम जाओ मैं बस अभी आता हूँ"। इतना कहकर राम ने मोहन को अंदर भेज दिया। तब भी 'ऑफ़ीस' के शुरू होने में दस-पंद्रह 'मिनुट' बाकि थे।

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം തിയ്യതി..... പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

राम दफ़्तर के पास वाले बगीचे के पास थोड़ी देर खड़ा हो गया। कुछ सोचते हुए तभी कोई आदमी उसके पास आया!.. और बोला।

"अरे भय्या थोड़ा पैसे दे सकते हो मैं बहुत भूखा हूँ!.."। वह एक भिखारी था... लेकिन काफ़ी भूखा। राम को यह अचानक मुलाकात बिल्कुल भी पसंद नहीं आई और वह गुस्सा हो गया।

"तुम कौन होते हो!!: तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई यहाँ हमारे दफ़्तर में आकर भीख माँगने की!.."। राम ने गुस्से से कहा।

"मुझसे तुम कौन होते हो पूछने से पहले!.. आप अपने आपसे पहले पूछलिजिए "मैं कौन हूँ"... किसी की पहचान उसके नाम या रूप में नहीं बल्कि उसके कर्म में है जो उसने किया है"। वह भिखारी इन कठोर बातों को ~~राम के लिए~~ कह कर चला गया।

राम को यह बातो से कुछ

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം തിയ്യതി..... പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

अजीब महसूस हुआ। उसके कानों मे यह बाते गूँजने लगी और वह अतीत की यादों मे खो गया।

अतीत की यादों मे -

शाम हर दिन की तरह ही अपने कंपनी मे काम कर रहा था। दफ़्तर मे बैठे हुए उसको उसके बॉस ने बुलाया!.. किसी अहम मीटिंग के कारण। दोपहर का समय था। सूरज की किरणे दफ़्तर के काँच से होती हुई उस पर पड़ी। उसकी आँखे चमक रही थी!... उसीके साथ गरमी के कारण उसका पसीना-पसीना हो रहा था।

उसके पसीने की बूँद एक-एक कर के नीचे गिर रही थी जब वह मीटिंग के दौरान कुछ प्रदर्शन कर के कह रहा था। उसका पसीना सूरज की किरणों से चमक रहा था। ~~उसके~~ कहने के बाद वह आराम से अपने कुर्सी पर बैठ गया।

तभी उसको... उसकी पत्नी की कॉल आती है लगातार पाँच-छह बार और

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം, തൃശ്ശൂർ
തിയ്യതി..................
★ പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി ★

कुछ देर बाद भी। लेकिन वह किसी भी कॉल को नहीं उठाता। बस गुस्सा हो जाता है। "शायद बेकार मे कॉल कर रही है", शाम सोचा।

लेकिन मीटिंग के बाद वह कॉल करता है तब बहुत देर हो चुकी थी। उसकी पत्नी को किसी खतरनाक बिमारी ने कब्जा कर ~~लिया~~ लिया है। शाम ने किसी को अपनी पत्नी को कॉल करने पर सुना। वह तेज़ी से अपनी गाड़ी लेकर अस्पताल ~~के मेलिए~~ जाने लगा।

वहाँ दिल्ली मे काफी ज्यादा भीड़ थी। लोग शाम के उस वक्त भी भीड़ जमा रहे थे। कई सारे बच्चों की खेलने और हँसी-खुशी की आवाज़े शाम के कानों मे गूँज रही थी।

लेकिन शाम अपने मंजील पर ही ध्यान दे रहा था - "अपनी पत्नी के पास पहुँचना!..", सूरज डूब रहा था। सूरज की आखिरी किरणे गाड़ी के शीशे से होती हुई

उसके चेहरे पर पड़ी। उसका चेहरा चमक रहा था। चेहरा साफ़ नज़र नहीं आ रहा था मगर कहीं से तो एक पानी की बूँद उसकी हथेली के मुट्ठी पर गिर पड़ी।

शायद खुद आसमान ही सूरज के जाने से रो रहा हो?, राम ने उस पानी की बूँद को अपने गालों से पोछ लिया। वह मुस्कुराने की कोशिश कर रहा था लेकिन उस मुस्कुराहट के पीछे मे ही दर्द बसी थी।

राम दौड़ते हुए अस्पताल के अंदर गया। कोई नर्स.. उसको देखकर आराम से चलने के लिए कह रही थी मगर उसका मन अपनी पत्नी के बारे मे ही सोचकर दुःख के सागर मे डूब रहा था।

राम अपने पत्नी के पास पहुँचा..बहुत देर के बाद। पत्नी के हाथ ठंडे हो चुके थे। उसकी साँस को राम शमी ने ध्यान दिया। लेकिन वह बस वहम थी। वह अब नहीं रही...!

राम वहीं गिरकर रोने लगा। उसके दिल मे दरारे पड़ चुकी थी। आँखो से लगातार आँसू की बूँदे गिर रही थी। उसका साथ देने बस अब ऊपर अँधेरे भरे आसमान मे उजाला देता चाँद ही थी।

"राम! अरे राम सुन रहे हो!" मोहन की आवाज़ सुनकर राम अपने अतीत की यादों से बाहर आया।

अतीत से वापस-

"अरे चलो न आँफीस के अंदर चलते है! तुम कब तक वहीं खड़े रहोगे", मोहन जल्दी राम के ~~आ~~ पास आकर कहा।

राम मोहन की ओर मुड़ा और कहा - "मोहन! "मै कौन हूँ"", उसकी आँखो से तब भी अपने कर्म के आँसू ~~की बूँदे~~ एक-एक करके गिर रही थी।

"अरे राम क्या हुआ तुम

क्यों रो रहे हो?"। मोहन ने उसकी ओर देखकर पूछा।

"अपनी पहचान और कर्म के बारे में जानकर।", शाम ने दिल में पत्थर रख कर कहा

सबक : जिंदगी में हम कभी-कभी नाम या रूप की मदद से किसी को नहीं पहचान पाते मगर किए गए कर्म से हम किसी को भी पहचान सकते हैं।